दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
उच्च शिक्षा और शोध संस्थान
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

दिनांकः 26.05.2015

Time: 10.00 am to 01.00 pm — **एम.ए., (द्वितीय वर्ष)** — **पूर्णांकः75**

हिन्दी : प्रश्न पत्र-6

प्राचीन एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य

सूचनाः खंड 'क' से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। खंड 'ख' अनिवार्य है।

खंड 'क' **4x10=40**

1. विद्यापति की भक्ति भावना का निरूपण कीजिए।

2. 'पृथ्वीराज रासो' की प्रामाणिकता का निर्धारण कीजिए।

3. 'पद्मावत' इतिहास और कल्पना का अद्भुत समन्वय है। इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

4. 'कबीर निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तक हैं।' इस कथन की सोदाहरण समीक्षा कीजिए।

5. 'विनय-पत्रिका' के आधार पर तुलसी की भक्ति भावना स्पष्ट कीजिए।

6. 'भ्रमरगीत सार' में विप्रलंभ श्रृंगार योजना में विरहिणी नायिकाओं की विभिन्न दशाओं का सोदाहरण परिचय दीजिए।

7. रीतिकालीन काव्य-परम्परा के आधार पर बिहारी की भाव-व्यंजना का विवेचन कीजिए।

8. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए-
   1. कबीर की भाषा शैली
   2. तुलसी का लोकनायकत्व
   3. विद्यापति का जीवन-परिचय
   4. 'देसिल बयना'

II. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए- **05x07=35**

1. कुट्टिल केश सुदेष, पौहप रचयित पिक्क सद।
   क्मलगंध वयसंध, हंसगति चलत मंद-मंद।।
   सेत वस्त्र सौहै सरीर, नष स्वाति बुंदजस।
   भ्रमर भँवहि भुल्लहिं सुभाव मकरंद बास रस।।

अथवा

जय जय भैरबि असुर-भयाउनि, पसुपति-भमिनि माया।
सहज सुमति बर दिअओ गोसाउनि, अनुगति गति तुअ पाया।।
बासर-रैनि सबासन सोभित, चरन चंद्रमनि चूड़ा।
कतओक दैत्य मारि मुँह मेलल, कतओ उगिलि कैल कूडा।।

...2..

2. जाका गुरु भी अंधला, चेला खरा निरंध।
अंधै अंधा ठेलिया, दून्यूँ कूप पडंत
प्रेम न बारी ऊपजै, प्रेम न हाटि बिकाई।
राजा परजा जिहिं रुचै, सिर दे सो ले जाई।।

अथवा

अनियारे दीरघ दृगनि, कितौ न तरुनि समान?
वह चितवनि और कछू, जिहिं बस होत सुजान।।
पत्राही तिथि पाइये, वा घर के चहुँ पास।
नितप्रति पून्योई रहत, आनन ओप उजास।।

3. चढ़ा असाढ़ गगन घन गाजा। साजा बिरह दुन्द दल बाजा।।
धूम, साम, धौरे घन धाए। सेत धजा बग पाँति देखाए।।
खड़ग-बीजु चमकै चहुँ आरा। बुंद-बान बरसहिं घन घोर।।

अथवा

कातिक सरद-चंद उजियारी। जग सीतल, हौं बिरहै जारी।।
चौदह करा चाँद परगासा। जनहुँ जरै सब धरति अकासा।।
तन मन सेज करै अगिदाहू। सब कहैं चंद, भएउ मोहिं राहू।।

4. पथिक! सँदेसों कहियो जाय।
आवैंगे हम दोनों भैया, मैया जनि अकुलाय।
याको बिलग बहुत हम मान्यो जो कहि पठयो धाय।
कहँ लौं कीर्ति मानिए तुम्हरी बड़ो कियो प्य प्याय।।

अथवा

आयो घोष बड़ो व्योपारी।
लादि खेप गुन ज्ञान-जोग की ब्रज में आन उतारी।
फाटक दैकर हाटक माँगत भोरै निपट सुधारी।
धुर ही तें खोटो खोयों है लये फिरत सिर भारी।।

5. राम को गुलाम, नाम 'रामबोला' राख्यौ राम,
काम यहै, नाम द्वै हौ कबहूँ कहत हौं।
रोटी लूगा नीके राखै, आगेहूँ की वेद भाखै,
भलो ह्वै है तेरा ताते आनंद लहत हौं।

अथवा

सुन मन मूढ़! सिखावन मेरो।
हरिपद-बिमुख लक्ष्यों न काहु सुख सठ! यह समुझ सबेरो।।
बिछुरे ससि-रबि मन-नैनति ते, पावत दुख बहुतेरौ।
भ्रमत, स्रमित निसि-दिवस गगन महँ, तहँ रिपु राहु बड़ेरो।।

.....